'प्रज्ञा' जर्नल का संक्षिप्त परिचय

'प्रज्ञा' जर्नल विश्वविश्रुत काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की प्रसिद्ध शोध पत्रिका है। यह पत्रिका सन् 1958 ई0 से लेकर आज तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की समृद्ध वैदुष्य परम्परा का निरन्तर संवहन करती चली आ रही है। यह पत्रिका हिन्दी, अंग्रेजी एव संस्कृत भाषा में प्राची एवं प्रतिची ज्ञान की विविध शाखाओं से संबन्धित स्तरीय शोध–प्रपत्र/लेख प्रकाशित करती है और साथ ही इस महान विश्वविद्यालय के संस्थापक प्रातः स्मरणीय पूज्य महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के विचारों, संकल्पों एवं सपनों को समृद्ध करने हेतु निरन्तर प्रयत्नशील है। हर्ष का विषय है कि देश–विदेश के अनेक मनीषियों एवं विश्वविद्यालय परिवार के ख्याति प्राप्त ढेर सारे विद्वानों का हमें निरन्तर सकारात्मक शैक्षणिक सहयोग मिलता रहा है, जिससे इस पत्रिका की ख्याति अन्तरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय जगत में दिनों दिन बढ़ती जा रही है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में अनेक मनीषियों, चिन्तकों एवं विद्धानों का हमें शैक्षणिक सकारात्मक सहयोग मिलता रहेगा, जिससे हम महामना द्वारा प्रज्वलित इस ज्ञान–यज्ञ को भविष्य में और भी अधिक भास्वर एवं तेजस्वी स्वरूप प्रदान करते रहेंगे। ध्यातव्य है कि यह पत्रिका अर्धवार्षिक है जो एक सत्र में दो बार प्रकाशित होती है।

महामना के इस महान विद्या मन्दिर का मूल उद्देश्य प्रज्ञावान मनुष्यों का निर्माण करना है, जो अपनी नीर–क्षीर विवेकिनी बुद्धि द्वारा सत् एवं असत्, नैतिक एवं अनैतिक तथा करणीय एवं अकरणीय में तात्विक अन्तर कर सकें और समयानुकूल उनके सारवान अंशों का संग्रह कर उसे जीवन में उतार कर समाज एवं देश का कल्याण कर सकें। प्रज्ञावान मनुष्य प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों के भास्वर पक्षों एवं आधुनिक ज्ञान/विज्ञान के उपयोगी आयामों को सम्यकरूपेण ग्रहण करने में समर्थ होता है और वह अपनी प्रज्ञा द्वारा सम्पूर्ण मानवता कि सेवा करने में सक्षम सिद्ध होगा। महामना के इन विचारों एवं आकांक्षाओं की झलक प्रायः उनके अनेक उद्बोधनों में मिलती हैं। इस संदर्भ में 10 सितम्बर 1935 को महामना द्वारा छात्रों को दिया गया अमर संदेश स्मरणीय है– *''हिन्दू विश्वविद्यालय की संस्थापना तुम्हारे भीतर शारीरिक बल के साथ धर्म की ज्योति और ज्ञान का बल भरने के लिए हुई, इसे सदैव स्मरण रखो।''*

महामना के इन विचारों एवं संकल्पों को पूरा करने के उद्देश्य से सन् 1958 में **'प्रज्ञा'** शोध–पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया, जिसके सहायक सम्पादक थे प्रसिद्ध विद्वान प्रो0 चेरियन थामस। इस ऐतिहासिक पत्रिका के प्रथम अंक के संस्थापक सम्पादक मण्डल के आदरणीय सदस्य थे–महान कलाविद् एवं सांस्कृतिक मनीषी प्रो0 वासुदेव शरण अग्रवाल, प्रसिद्ध वनस्पति वैज्ञानिक एवं चिन्तक प्रो0 ए0 वी0 मिश्र एवं ख्याति प्राप्त साहित्यकार एवं ओजस्वी वक्ता प्रो0 हजारी प्रसाद द्विवेदी।

'प्रज्ञा' के प्राचीन अंकों को पढ़ने पर सुखद अनुभूति होती है कि इसमें देश एवं विदेश की अनेक महान विभूतियों, विश्व प्रसिद्ध विचारकों एवं अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों के उच्चस्तरीय लेख/विचार प्रकाशित होते रहे हैं। इसमें प्राचीन शास्त्रों एवं ज्ञान के विविध अनुशासनों तथा आधुनिक विज्ञान की विविध शाखाओं से सम्बन्धित अनेक मौलिक एवं श्रेष्ठ कोटि के शोध–पत्र/लेख निरन्तर प्रकाशित होते रहे हैं। उन सभी विद्वानों के शैक्षणिक एवं रचनात्मक सहयोग द्वारा **'प्रज्ञा'** का स्तर दिनों दिन समुन्नत होता गया है। यहाँ पर उन सभी विद्वानों, विचारकों एवं मनीषियों का नामोल्लेख करना संभव नहीं है, फिर भी उन महान विभूतियों में से उदाहरण के तौर पर कुछ लोगों का नामोल्लेख किया जा रहा है, ताकि आज के पाठकों को **'प्रज्ञा'** की महती उपलब्धियों एवं उसके सहयोगी महापुरूषों की समृद्ध परम्परा का ज्ञान हो सके।

'प्रज्ञा' के विगत अंकों में जिन महान राजनेताओं एवं विचारकों के लेख/वक्तव्य प्रकाशित हुए हैं, उनमें राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, पं0 मदन मोहन मालवीय, सम्पूर्ण क्रान्ति के जनक जयप्रकाश नारायण, सर्वपल्ली डॉ0 राधाकृष्णन, श्री शिवप्रसाद गुप्त, डॉ0 कालू लाल श्रीमाली, डॉ0 कर्ण सिंह एवं डॉ0 सम्पूर्णानन्द आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आधुनिक विज्ञान के विविध क्षेत्रों की जिन महान विभूतियों का सहयोग **'प्रज्ञा'** को

मिला है, उनमें विश्व प्रसिद्ध महान वैज्ञानिक जयन्त विष्णु नार्लीकर, नोवेल पुरस्कार विजेता सर सी0 वी0 रमन, डॉ0 गोपाल त्रिपाठी, डॉ0 प्रेम नारायण सोमानी, प्रो0 वृजमोहन, डॉ0 हरि वल्लभ नेमा, डॉ0 वेणी माधव शुक्ल, डॉ0 नन्दलाल सिंह, डॉ0 के0 एन0 उडुप्पा, डॉ0 देवेन्द्र कुमार राय, डॉ0 रमानाथ द्विवेदी, डॉ0 प्रियव्रत शर्मा, डॉ0 ज्योतिर्मित्र, प्रो0 धीरेन्द्र पाल सिंह (कुलपति), डॉ0 लालजी सिंह (कुलपति), प्रो0 गिरीश चन्द्र चौधरी, प्रो0 भोला नाथ द्विवेदी एवं प्रो0 विनोद कुमार जोशी आदि का नाम विशेष आदर के साथ लिया जा सकता है।

संस्कृत वाङगमय के जिन मूर्धन्य पण्डितों एवं महान आचार्यों का आशीर्वाद निरन्तर **'प्रज्ञा'** को मिलता रहा है, उनमें पं0 महादेव पाण्डेय, पं0 रतिनाथ झा, पं0 गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, पं0 रामधीन चतुर्वेदी, पं0 केदारदत्त जोशी, आचार्य बलदेव उपाध्याय, पं0 शिवदत्त चतुर्वेदी, पं0 मधुसूदन शास्त्री, डॉ0 एस0 भट्टाचार्या, डॉ0 सीताराम शास्त्री, महोमहापाध्याय पं0 रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रो0 कृष्ण कांत शर्मा, प्रो0 हृदय रंजन शर्मा, प्रो0 सच्चिदानंद मिश्र, प्रो0 सोमनाथ नेने, एवं प्रो0 विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी आदि का नाम एवं योगदान अविस्मरणीय है। अंग्रेजी साहित्य एवं पाश्चात्य विद्या के जिन विश्व प्रसिद्ध स्कालरों के लेख/विचार **'प्रज्ञा'** में छपते रहे हैं, उनमें प्रो0 विक्रमादित्य राय, प्रो0 तुलसी नारायण सिंह, प्रो0 जी0 मोहन थम्पी, प्रो0 ओ0 पी0 माथुर, प्रो0 एस0 एम0 पाण्डेय, प्रो राजाराम मेहरोत्रा, प्रो0 राजनाथ, प्रो0 अखिलेश कुमार त्रिपाठी, आदि का नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय है। प्राच्य विद्या एवं संस्कृति के जिन महान विभूतियों का अवदान **'प्रज्ञा'** को मिला है, उनमें प्रो0 वासुदेव शरण अग्रवाल, प्रो0 एन0 के0 देवराज, प्रो0 लल्लन जी गोपाल, ठाकुर जयदेव सिंह, पं0 अम्बिका प्रसाद बाजपेयी, डॉ0 शंकर देव अवतरे, डॉ0 प्रेमलता शर्मा, प्रो0 हरिहर नाथ त्रिपाठी, डॉ0 भानु शंकर मेहता, डॉ0 जनार्दन उपाध्याय, डॉ0 आनन्द कृष्ण, प्रो0 डी0 ए0 गंगाधर, प्रो0 देवव्रत चौबे, प्रो0 मारूति नंदन तिवारी, प्रो0 पी0 एन0 पाण्डेय एवं प्रो0 चन्द्रकला पाडिया आदि के प्रति हम विशेषरूप से आभारी हैं। पाश्चात्य विद्वानों में एस0 इ0 लार्ड इरविन, एस0 आर0 मेकेडोनाल्ड एवं जी0 हर्जवर्ग का नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय है।

हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अनेक महान विचारकों एवं प्रसिद्ध साहित्यकारों का आरम्भ से ही **'प्रज्ञा'** को विपुल मात्रा में निरन्तर सहयोग मिलता रहा है। इन विशिष्ट विद्वानों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, सुश्री महादेवी वर्मा, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', आचार्य विश्वनाथ प्राद मिश्र, प्रो0 नामवर सिंह, प्रो0 विष्णुकान्त शास्त्री, प्रो0 शिवकुमार मिश्र, श्री प्रभाकर माचवे, प्रो0 शिव मंगल सिंह 'सुमन', डॉ0 श्रीकृष्ण लाल, प्रो0 बच्चन सिंह, प्रो0 भोलाशंकर व्यास, प्रो0 शिवप्रसाद सिंह, डॉ0 विजय शंकर मल्ल, प्रो0 त्रिभुवन सिंह, प्रो0 नागेन्द्र नाथ उपाध्याय, प्रो0 उदयभानु सिंह, प्रो0 महेन्द्र नाथ दूबे, डॉ0 भगवती प्रसाद राय, प्रो0 श्यामसुन्दर शुक्ल, प्रो0 परमानन्द श्रीवास्तव, प्रो0 विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, डॉ0 राममोहन पाण्डेय, प्रो0 एम0 शेषन, प्रो0 दिलीप सिंह, प्रो0 श्रीनिवास पाण्डेय, प्रो0 महेन्द्र नाथ राय, प्रो0 कुमार पंकज, प्रो0 अवधेश प्रधान, एवं प्रो0 बलिराज पाण्डेय आदि का **'प्रज्ञा'** को दिया गया अवदान विशेष रूप से रेखांकित करने योग्य है।

अपनी विकास यात्रा में **'प्रज्ञा'** ने अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। सामान्य अंकों के साथ–साथ यथावसर **'प्रज्ञा'** के विशिष्ट अंक भी प्रकाशित होते रहे हैं, जो तत्कालीन समय एवं आवश्यकता के अनुरूप महत्वपूर्ण तो थे ही और आज भी उनकी सार्थकता बनी हुई है। इन चिर–स्मरणीय विशेषांकों में जिनके नाम विशेष आदर के साथ लिये जा सकते हैं, वे निम्नलिखित हैं : **''मालवीय जन्मशती विशेषांक''** (1961), **''काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्वर्ण जयन्ती विशेषांक''** (1966), **''महर्षि अरविन्द जन्मशती विशेषांक''** (1972), **''मानस चतुश्शती विशेषांक''** (1973–74), **''हीरक जयन्ती विशेषांक''** (1976–77), **''विज्ञान विशेषांक''** (1981), **''प्रेमचन्द स्मृति अंक''** (1982), **''कार्ल मार्क्स स्मृति अंक''** (1985), **''भारतेन्दु स्मृति अंक''** (1986), **''सर सी0 वी0 रमन स्मृति अंक''** (1987–88), **''सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्मृति अंक''** (1989), **''नेहरू स्मृति अंक''** (1989–90), **महामना स्मृति अंक''** (1993–96), **''एनीबेसेन्ट समृति अंक''** (1996–2001), **''काशी गौरव विशेषांक–I''** (2006–2007), **काशी गौरव विशेषांक– II''** (2007–2008), प्रज्ञा का **''स्वर्ण जयंती विशेषांक''** (2008–09) **''पर्यावरण विशेषांक''** (2009–2010), **''मानव–मूल्य विशेषांक''** (2010–2011), **''150वीं महामना मालवीय जयंती विशेषांक''** (2010–2011), एवं **''150वीं महामना मालवीय जयंती विशेषांक : द्वितीय सोपान''** (2012–2013) आदि।

***